IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नमिता त्रिपाठी

रिसर्च स्कॉलर, श्री ज़े. जे. टी. विश्वविद्यालय झुंझुनू (राजस्थान)

सहायक प्रोफेसर, बी.एड.,महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उ.प्र.

सारांश

संवेदना मानव जीवन के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है । यदि बुद्धि के विभिन्न स्वरूपों एवं उनके आयाम पर गंभीरता पूर्वक विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है की संवेदना व्यक्ति के बुद्धि का एक निर्धारक पक्ष होता है। मनोवैज्ञानिक भाषा में इसे संवेगात्मक बुद्धि के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अनुसंधान में बी.एड.प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक पक्ष का अध्ययन करने के लिए उनकी संवेगात्मक बुद्धि को आधार माना है। शोधकर्त्री ने यह भी स्वीकार किया है कि व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि उसके व्यक्तित्व का निर्धारक पक्ष होता है अर्थात यह कहा जा सकता है की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के मध्य पारस्परिक संबंध होता है। प्रस्तुत अनुसंधान बी.एड..प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के विविध आयामों के पारस्परिक संबंध पर केंद्रित एक शोध अध्ययन है।

प्रस्तावना

मानव जीवन के प्रत्येक क्रिया – कलाप परिस्थितिजन्य तो होते हैं परन्तु परिस्थितियों पर अनुक्रिया का जो मौलिक स्वरूप होता है वो व्यक्ति के व्यक्तित्व द्वारा निर्देशित होता है। यदि हम व्यक्तित्व के विकास पर दृष्टिपात करें तो शिशु के जीवन आरंभ की परिस्थितियों से लेकर विकास की विभिन्न अवस्थाओं में जिंस परिवेश में उसका पालन पोषण हुआ है व उसकी जनांकिक विशिष्टताएँ, इन दोनों का समेकित प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। जन्म के बाद प्रायः एक शिशु अपनी माँ पर पूर्णतः अपने आहार दिनचर्या के लिए निर्भर होता है। इसकी हम व्याख्या इस प्रकार भी कर सकते हैं कि वह उस कालखंड में एक निर्भर जीव या पशु के रूप में होता है जिसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ उसके व्यवहार को निर्देशित करती हैं। विकास की अपनी विभिन्न अवस्थाओं में बालक आरंभ में अपनी माँ से विभिन्न प्रकार के भाषाई शारीरिक या अनुक्रिया के लिए विशिष्ट प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त करता रहता है। यह प्रशिक्षण माँ की गोद से धीरे धीरे पारिवारिक परिस्थितियों पर निर्भर करने लगता है। इसप्रकार शोधकर्त्री की दृष्टि में बालक अपने आरंभिक जीवन में जीस प्रकार की पारिवारिक परिस्थितियों यह सामाजिक सरोकारों में स्वयं को पाता है वहीं पारिवारिक परिस्थितियां और सामाजिक सरोकार अग्रगामी जीवन का आधार बनते है। व्यक्तित्व के संदर्भ में यह एक सामान्य अवधारणा है कि यह शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण पर्सनैलिटी है जो लैटिन भाषा के पर्सोना शब्द से लिया गया है । लैटिन भाषा में पर्सोना का अर्थ मुख पर लगाए जाने वाली आवरण या मुखौटे से है। यह वो मुखौटा ह जिसका प्रयोग प्राचीन रोम में गृह कलाकारों द्वारा नाट्य अभिनय के दौरान किया जाता है। यह वो स्वरूप है जिसको अभिनेता, दर्शक को दिखाना चाहता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व अपने बाहरी रूप या क्रियाओं द्वारा किसी को प्रभावित करने की क्षमता का परिणाम है

DOI: 10.48175/IJARSCT-28304

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

वर्तमान परिवेश में शिक्षा जगत की आवश्यकताओं के अनुरुप शिक्षक के व्यवसाय में मूल्यगत बदलाव दृष्टिगत है। एक शिक्षक के लिए विषय के पर्याप्त ज्ञान के साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि उसका मानसिक स्वास्थ्य उत्तम हो। इसी क्रम में शिक्षक में औसत या उससे अधिक संवेगात्मक बुद्धि अपेक्षित है, जिससे वह स्वयं को कक्षागत या सामाजिक प्रकार के द्वन्द एवं तनाव से मुक्त रख सकें। यद्यपि सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में स्वयं को तनाव से मुक्त रखना सहज नही है, वरन् इसके लिए अनेक प्रयास एवं संवेगात्मक संतुलन अपेक्षित है।

एक व्यावसायिक शिक्षक में संवेगात्मक बुद्धि के साथ–साथ दृढ़ आत्मभाव एवं उच्च बुद्धि अपेक्षित है जिससे वह स्वयं की उपलब्धियों के साथ–साथ छात्रों के गुणात्मक सम्वर्धन में सहयोग कर सके।

उपरोक्त सन्दर्भ को समझने के लिए अध्ययन से सम्बन्धित चरों को निम्नवत परिभाषित किया गया है–

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषाऐं :

संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति की अपनी उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह अपनी संवेगात्मक परिस्थितियों को समझता है। सैलोवी एवं मेयर ने सन् 1990 में संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया कि यह किसी व्यक्ति द्वारा अपनी एवं अन्य व्यक्ति के संवेगों को समझने की व्यक्तिगत क्षमता होती है। जिसके द्वारा व्यक्ति बेहतर समझ, सहानुभूति, संवेगात्मक नियमन, आत्म अभिप्रेरण एवं सामाजिक कौशिल सीखता है।

सिंगलिंग एवं सैकलोपस्के (2013) तथा अलीगर एवं लोपेज कासा (2016) ने बताया कि पेट्राइड्ज ट्रेट मॉडल, संवेगात्मक बुद्धि का परिष्कृत स्वरूप प्रस्तुत करता है। यह सिद्धान्त संवेगात्मक बुद्धि के 'योग्यता माडल' तथा 'व्यक्तित्व माडल' के मध्य अन्तर को प्रदर्शित करता है। संवेगात्मक बुद्धि के 'ट्रेट माडल' के अन्तर्गत संवेगात्मक बुद्धि का मापन 'आत्म रिपोर्ट' द्वारा किया जाता है। ट्रेट आफ इमोशनल इन्टलीजेन्स क्वेश्चनायर (टी.ई.आई.क्यू) के द्वारा इस माडल के अन्तर्गत आकड़े एकत्र किये जाते हैं। पेट्राइड्स (2009) फ्रडिरिक्सन एवं अन्य (2012) ने बताया कि किशोर एवं प्रौढ़ वय वर्ग का ट्रेट, इमोशनल इन्टेलीजेन्स उनके सामाजिक एवं संवेगात्मक दक्षताओं से धनात्मक रूप से सह–सम्बन्धित है।

मैकरोवेली एवं अन्य (2009) तथा हैनसेने एवं लिगार्ड (2012) ने बताया कि ट्रेट इमोशनल इन्टेलिजेन्स एवं शैक्षिक उपलब्धियों में धनात्मक सम्बन्ध है जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रेरित करते हैं। शीलगुण संवेगात्मक बुद्धि से आशय संवेगात्मक आत्म आत्मबोध के उस वितरण से है जो व्यक्तित्व के निम्न स्तर पर पाया जाता है । पेट्राइड्स पिटा एवं कौकिनाकी (2007) के अनुसार शील गुण संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति की संवेगात्मक दक्षता के आत्मबोध से है। 'शीलगुण माडल' गोलमैन के संवेगात्मक बुद्धि के रूप में जिसमें संवेगात्मक बुद्धि को संज्ञानात्मक योग्यता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। शीलगुण संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली में चार डोमेन यथा बेहतरी, आत्म नियन्त्रण, संवेगात्मक तथा सामाजीकरण से जुडे 15 स्केल होते है। निकोलाजक (2007) ने संदर्भित उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता को यथेष्ट बताया है।

बुद्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि प्रायः समीपवर्ती सम्प्रत्यय है जिन्हें अलग–अलग नहीं देखा जा सकता है। परन्तु दोनों के मध्य एक क्षीण स्तर का सह–सम्बन्ध पाया जाता है जो यह संकेत देता है कि ये दोनों परस्पर सम्बन्धित है परन्तु मूलतः स्वतंत्र ईकाइयॉ है।

जिस प्रकार बुद्धि के मापन हेतु सामान्य पेपर–पेन्सिल परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है एवं ये परीक्षण पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है परन्तु संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में यह अपर्याप्त है एक अध्ययन में पाया कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले व्यक्ति प्रायः बौद्धिक उपलब्धियों में दक्ष है परन्तु व्यक्तिगत उपलब्धियों में बुद्धि लब्धि से कोई मेल नहीं है। उच्च बुद्धि लब्धि वाले व्यक्तियों में

विस्तृत बौद्धिक रूचियॉ एवं योग्यताऐं पाई जाती है। परन्तु उच्च बौद्धिक संवेगात्मक बुद्धि धारित करने वाला व्यक्ति सामाजिक रूप से दक्ष होता है तथा सम्बन्धों में सहिष्णु होता है। उसका संवेगात्मक जीवन समृद्ध होता है एवं वह सामाजिक धरातल पर अधिक स्वीकार्य होते हैं।

व्यक्तित्व की परिभाषा –

मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में व्यक्तित्व आजकल एक अत्यंत लोकप्रिय शब्द है। ईसा के सैकड़ों वर्ष पहले ग्रीक नाटकों में कलाकार मुखौटे पहना करते थे वहॉ से परसोना शब्द की उत्पति मौलिक रूप से हुई थी।

व्यक्तित्व बहुत से शीलगुणों का संयोजन है कोई एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पूर्णतः समान नहीं होता है। किसी व्यक्ति के गुणों का विशिष्ट संयोजन उसे वैयक्तिगत पहचान प्रदान करता है। व्यक्तित्व व्यवहारों, दृष्टिकोणों, मल्यों का एक सांगठनिक निकाय है जो व्यक्ति विशेष को परिभाषित करता है तथा यह बताता है कि वह अपने वातावरण के प्रति किसी स्थिति में कैसा व्यवहार करेगा।

इसके विभिन्न पक्ष स्वभाव, मूल्य दृष्टिकोण, प्राथमिकतायें आदि है जो यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति अपने आस–पास के संसार और अन्य लोगों के किस प्रकार अंतर्क्रिया करेगा। व्यक्तित्व का निर्माण अनुवांशिक कारण, वातावरणीय कारक तथा जीवन के अनुभवों की अंतः क्रिया के परिणाम स्वरूप होता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गयी व्यक्तित्व की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें इस प्रकार है।

आलपोर्ट– 1937– के अनुसार व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक तंत्रों का ऐसा गतिशील संगठन है जो उसके वातावरण में उसके विशिष्ट समायोजन का निर्धारण करते है। इस परिभाषा में आलपोर्ट ने व्यक्तित्व के आंतरिक और वाह्य दोनों गुणों को महत्वपूर्ण माना है परन्तु आंतरिक गुणों को अधिक महत्व दिया है।

वाल्टर मिकेल–1981 के अनसुार व्यक्तित्व का अर्थ व्यवहार का विशिष्ट पैटर्न है जिसके अंतर्गत संवेगो तथा चिंतन भी आते है जो यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों के साथ किस प्रकार समायोजन करेगा।

बेरोन–1993 के अनुसार व्यक्ति के चिंतन, व्यवहार तथा संवेग के अनूठे तथा लगभग स्थिति पैर्टन को सामान्य व्यक्तित्व के रूप में परिभाषित किया जाता है।

व्यक्तित्व का प्रतिरूप स्वयं में एकीकृत बहुआयामों की संरचना है जिसका मूल स्वयं के सम्मान में है । व्यक्तित्व प्रतिरूप एक चक्र की भांति है जिसकी धुरी व्यक्ति का स्वयं का संप्रत्यय तथा तीलियॉ विभिन्न शीलगुण है जो स्वयं से जुडे हैं। व्यक्तित्व के विषय में यह कहा जा सकता है कि यह जन्म एवं पालन–पोषण के समेकित प्रभाव का परिणाम है। अर्थात सामान्य जीवन में दिखाई देने वाला प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी वंशावली एवं जिस वातावरण में उसका पालन हो रहा है वह उसका सम्मिलित रूप होता है। दो व्यक्तियों के परिस्थिति जन्म व्यवहार में पाया जाने वाला अन्तर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण होता है। जीवन की एक ही परिस्थिति में व्यक्तियों की प्रतिक्रिया में अन्तर पाया जाता है, अन्तर उनके शील गुण के कारण होता है।

विभिन्न वातावरणीय कारक जैसे परिवार, विद्यालय, इत्यादि का जीवन के विभिन्न चरण पर योगदान व्यक्तिशः भिन्न–भिन्न होता हैं। व्यक्तित्व के विकास में अधिगम का विशेष योगदान होता है जिसमें वाह्य एवं आन्तरिक अधिगम के द्वारा व्यक्तित्व का स्वतः रूपान्तरण होता रहता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण.

शोधकर्त्री ने शोध समस्या के विभिन्न आयामों पर समस्या की प्रकृति, विस्तार, निर्मित परिकल्पनाएँ एवं शोध विधि का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। शोधकर्त्री ने पूववर्ती शोध की अनुशंसा का भी अध्ययन किया है जो नवीन पक्ष को आलोकित कर रहे है।

तामानई (2010) ने वयस्कों के संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि पुरूष एवं महिला व्यस्कों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर दृष्टिगत नहीं है। यह इस बात का संकेत है कि लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता है।

मेयर (1999) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं बुद्धि सम्बन्धी एक अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बद्धि को एक मानक बुद्धि के रूप में स्वीकार किये जाने हेतु यह आवश्यक है कि वय एवं अनुभव की वृद्धि के साथ–साथ होती है। उन्होंने किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि तथा व्यस्कों के संवेगात्मक बुद्धि की परस्पर तुलना की ओर पाया कि वयस्कों की संवेगात्मक बुद्धि किशोरों की तुलना में श्रेष्ट है।

तहमासबी (2007) ने विश्वविद्यालय के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके संगत संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष प्राप्त किया कि पुरूष एवं स्त्रियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं है। अर्थात संवेगात्मक बुद्धि पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

त्यागी (2004) ने माध्यामिक कक्षा के शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है। शोधकर्त्री ने पूरक उद्देश्य के रूप में पुरूष एवं महिला शिक्षकों की तुलना भी की है। इस अध्ययन में कुल 500 माध्यमिक शिक्षक सम्मिलित है जिनमें से 350 पुरूष एवं 150 महिला शिक्षक है। यह अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के घुले जनपद में किया गय है । शोधकर्त्री ने साख्यिकीय विश्लेषण हेतु केन्द्रिय प्रवृत्ति की गणना हेतु मध्यमान तथा केन्द्रीय प्रवृत्ति से विचलन हेतु मानक विचलन एवं सार्थकता परीक्षण द्वारा अंकों का विश्लेषण किया है । प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि संवेगात्मक बुद्धि का मान कम है तथा यह लिंग एवं आयु के मामले में स्वतंत्र है।

काव्यल एवं अवस्थी (2005) ने चण्ढ़ीगढ़ के किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके लैंगिक अंतर का अध्ययन किया है। शोधकर्त्री नें प्रस्तुत अध्ययन मं 10 वीं कक्ष के 150 विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन किया है। संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है अनुसंधान के परिणामों से स्पष्ट है कि पुरूषों की संवेगात्मक बुद्धि महिलाओं की तुलना में कम है। अनुसंधान के परिणाम से यह ज्ञात होता है कि बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि बालकों की तुलना में अधिक है संवेगात्मक बुद्धि का यह अंतर .01 विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक है।

सनबुल एवं असलान (2008) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जो कक्षा 01 से 04 क के विद्यार्थियों पर केन्द्रित है। न्यादर्श के चयन हेतु शोधकर्त्री ने 312 विद्यार्थियों का चयन किया । शोधकर्त्री नें शैक्षिक उपलब्धि की गणना हेतु अंतिम सेमेस्टर के प्राप्तांकों को आधार माना है। परिणामों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि बालक एवं बालिकओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पार्ड़ी (2009) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यावसायिक संतोष तथा मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में एक अध्ययन किया। यह अध्ययन अनुसंधान के परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि संवेगात्मक बुद्धि एवं लिंग के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया जाता हैं।

चोड एवं चिव (2011) ने संवेगात्मक बुद्धि तथा समस्या समाधान एवं मनोवैज्ञानिक समस्या से सम्बन्धित एक अध्ययन किया तथा परिणाम यह प्राप्त हुआ कि जिन विद्यार्थियों में कम सामन्जस्य पाया जाता है जो कम खुले हुए होते हैं कम बर्हिमुखी होते हैं

ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

उनमें निम्न स्तर का जीवन संतोष पाया जाता है। वहीं जिन व्यक्तियों में अधिक मनोविच्क्षुब्दता पायी जाती है वह कम संतुष्ट होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि मनोविच्क्षुब्दता से नकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित है।

अग्रवाल एवं अन्य (2017) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं समय प्रबन्धन के विषय में योग शिक्षा पर आधारित अध्ययन किया। यह अध्ययन दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर केन्द्रित था। जिसमें 17 से 22 आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया। संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए पन्त एवं प्राकश, 2004 द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया। संगत अध्ययन में शोधकर्ता ने दिशात्मक परिकल्पना बनायी। शोध के परिणाम में महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि पुरूषों की तुलना में उच्च पायी गयी तथा दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्यः

शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं अध्ययन से संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण में विभिन्न ऐसे आयामों को पाया जिसका संबंध व्यक्ति के व्यक्तित्व से दिखाई देता है। संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों के विश्लेषण त्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व पर उसके संवेगात्मक बुद्धि का संगत प्रभाव हो सकता है। इस उद्देश्य के दृष्टिगत शोधकर्त्री ने बी़ एड प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के अध्ययन को अनुसंधान का आधार निर्धारित किया है। शोधकर्त्री नें समस्या के औचित्य को रेखांकित किया है जहां यह पाया जाता है कि शिक्षक के संवेगात्मक परिपक्वता एवं स्वरूप उसके गरिमामयी ॱ व्यक्तित्व में प्रतिबिंबित होता है । इस प्रकार यह औचित्य पूर्ण है कि बीएड प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण आत्मक अध्ययन किया जाए जो संवेगात्मक रूप से पूर्ण शिक्षक के निर्माण में सहायक हो सके।

समस्या कथन :

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में ' बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन को शोध समस्या के रूप में परिभाषित किया है।

विशिष्ट उद्देश्य

विशिष्ट उद्देश्य शोधकर्त्री द्वारा निर्धारित शोध समस्या के संदर्भ में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं

1. बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।
2. बी.एड. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के मनोविच्क्षुब्दता आयाम का अध्ययन।
3. बी.एड. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम का अध्ययन।
4. बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के मनोविच्क्षुब्दता आयाम के मध्य संबंध का अध्ययन।
5. बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम के मध्य संबंध का अध्ययन।

परिकल्पना

शोधकर्त्री ने निर्धारित विशिष्ट उद्देश्यों हेतु अधोलिखित संगत परिकल्पनाओं का निर्माण किया है।

1. पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक मनोविच्क्षुब्दता आयाम समूह के बी.एड.प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक बहिर्मुखता आयाम समूह बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक मनोविच्क्षुब्दता के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।
5. बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक बहिर्मुखता आयाम के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

अध्ययन की विधि

इस शोध में शोधकर्त्री द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति है तो शोध की प्रकृति के दृष्टिगत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है

शोध समस्या के अनुरूप शोधकर्त्री द्वारा संवेगात्मक बुद्धि तथा व्यक्तित्व संदर्भित अध्ययन में सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक आयामों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वे विधि का चयन किया है। यह अध्ययन सीतापुर जनपद के सरकारी एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी.एड.. प्रशिक्षुओं पर आधारित है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा कला, विज्ञान विषयों से स्नातक तथा वित्त पोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी.एड.. कक्षाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं को जनसंख्या के रूप में स्वीकार किया है । अर्थात मानविकी एवं विज्ञान विषयों से प्रवेशित हुए सभी प्रशिक्षुओं को जो सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों मे बी.एड.. प्रशिक्षुओं के रूप में अध्ययनरत हैं को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन

संदर्भित अध्ययन में प्रतिनिधिकारी न्यादर्श प्राप्त करने हेतु यादृच्छिक चयन यद्यपि सर्वोत्तम विधि है परंतु अध्ययन परिस्थितियों के अनुरूप शोधकर्त्री द्वारा जनपदों के चयन से लेकर महाविद्यालयों के चयन एवं तदुपरान्त विद्यार्थियों के चयन हेतु बहुस्तरीय न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्त्री ने लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से संबद्ध हरदोई जनपद में संचालित उन सरकारी एवं स्ववित्तपोषित संबद्ध महाविद्यालयों की सूची प्राप्त की जिसमें द्वि वर्षीय बी.एड.. पाठ्यक्रम संचालित हैं। प्राप्त सूची से महाविद्यालयों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है

1 ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय

2 शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

स्तरीकृत न्यादर्शन के दूसरे चरण में दोनों क्षेत्रों से शोधकर्त्री द्वारा यादृच्छिक चयन द्वारा पांच– पांच महाविद्यालय चयनित किए गए है। महाविद्यालय में जाकर बी.एड.. कक्षाओं में उपलब्ध छात्र छात्राएं जो उस दिन बी.एड.. कक्षा में उपस्थित थे को न्यादर्श के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में 500 बी.एड.. प्रशिक्षुओं को चयनित किया है

आंकड़ों का संकलन

चयनित महाविद्यालयों में जाकर शोधकर्त्री द्वारा संवेगात्मक बुद्धि आयाम एवं व्यक्तित्व आयाम के संबंधित आंकड़ों के संग्रह हेतु निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है।

संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (छात्राध्यापक प्रारूप):

संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का निर्माण प्रोफेसर के.एस. मिश्रा (2004) द्वारा किया गया जो छात्राध्यापक प्रारूप है। यह परीक्षण देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है जो छात्राध्यापकों हेतु उपयुक्त है या अनुकूलित है। इस परीक्षण में कुल 33 प्रश्न है जिसके नीचे 1, 2, 3 एवं 04 से अंकित चार विकल्प दिये गये हैं।

व्यक्तिव अनुसूचीः

शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व का परीक्षण हेतु श्री एस.एस. जलोटा एवं श्री एस.डी कपूर द्वारा निर्मित आइजेन्क माउड्जले व्यक्त्त्वि अनुसूची का प्रयोग किया है। यह अनुसूची मनोविच्छुब्दता ,अन्तर्मुखता तथा बहिर्मुखता आयाम के मध्य सम्बन्ध के परीक्षण हेतु प्रयोग किया जाता है।

ऑकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्त्री ने संकलित आकड़ों के विश्लेषण हेतु उनकी प्रकृति के आधार पर साख्यिकीय विधियों का चयन किया है।

आकड़ों के अर्थपूर्ण विश्लेषण के लिये शोधकर्त्री ने आधारभूत स्तर पर कोन्द्रिय प्रकृति की मापों का प्रयोग किया है जो निम्नवत है।

मध्यमान – वितरण के मध्यमान से आशय अंकिक औसत से है जिसका अर्थ है कि न्यादर्श के मध्यमान की गणना हेतु समान्य सूची का प्रयोग किया जाता है।

माध्यिका– वितरण की मध्यिका से तात्पर्य है उस बिन्दु से है जिसके उपर एवं नीचे आधे–आधे आकड़े अवस्थित हैं यह स्थान या बिन्दु का परिचायक है।

मानक विचलन – केन्द्रिय प्रवृत्ति से विचलन की माप को मानक विचलन कहा जाता है।

सह–सम्बन्ध– सह–सम्बन्ध से आशय दो चरों के मध्य या आकड़ों के दो स्वरूपों के मध्यम सम्बन्ध से है । दो चरों के मध्य परस्पर संबंध किस प्रकार का है इसकी गणना सहसंबंध गुणांक के आधार पर की जाती है।

आकड़ो का विश्लेषण

सन्दर्भित अध्ययन में शोधकर्त्री ने जनसंख्या एवं न्यादर्श के प्रकृति के आधार पर सांख्यकीय विधियों का चयन किया है। शोधकर्त्री ने शोध समस्या पर अध्ययन हेतु प्राप्त आंकड़ों को विन्यसित कर उनका उद्देश्यगत वर्गीकरण किया है जिससे व्यवस्थित

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

आकड़ों का प्रयोग सांख्यकीय गणना में किया जा सके। इस खण्ड में वर्गीकृत आकड़ें एवं उनका साख्यकीय विश्लेषण प्रस्तुत है–

1.1.अ पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संम्वेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि–

बी0एड0 प्रशिक्षुओं जिनमें कला एवं विज्ञान वर्ग के सभी प्रशिक्षुओं को सम्मिलित किया गया है के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक, प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि को सारणी संख्या 4.1.अ में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 1.1.अ

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
पुरूष	21.9	5.9	.37
महिला	22.1	5.4	.34

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉकों के मध्यमानों की मानक त्रुटि क्रमशः .37 एवं .34 है। संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉाकों के मध्यमान की मानक त्रुटि यह व्यक्त करती है कि 100 न्यायदर्श मध्यमानों मे से 95 न्यायदर्श मध्यमानों $\pm 1.96\ \sigma m$ (± 1.96 X मध्यमान की मानक त्रुटि) सीमा के मध्य है या जनसंख्या मध्य

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के प्राप्तॉकों के वितरण का मध्यमान क्रमशः 21.9 एवं 22.1 है जो यह व्यक्त करता है कि पुरूष समूह की संवेगात्मक बुद्धि महिला समूह की तुलना में कम है यद्यपि पुरूष समूह का मानक विचलन 5.9 एवं महिला समूह का मानक विचलन 5.4 है जो पुरूष समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक के तुलना मे अधिक प्रसार को बता रहा है। अर्थ यह कि संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण में सम्मिलित पदों के द्वारा व्यक्त आयामों पर पुरूष समूह के प्राप्तॉक अधिक विभेदीकृत है।

1.1.ब पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का क्रान्तिक अनुपात

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक के मध्यमान का अन्तर .19 है तथा स्वतन्त्रता ॲश 498 है इसके आधार पर इनका क्रान्तिक अनुपात .50 है।

सारणी 1.1.ब

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का क्रान्तिक अनुपात

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमानों का अन्तर	Σd	t	स्वतन्त्रता का ॲश df
पुरूष एवं महिला	21.93 – 22.13	.50	.38	498

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सारणी 4.1.ब से स्पष्ट है कि पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के समूहों के संवेगात्मक बुद्धि का अन्तर .50 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है यथा t का मान .38 है। मध्यमानों का अन्तर न्यून है जिसका आशय यह कि पुरूषों एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में निम्न स्तर की अन्तर दृष्टिगत है। सामान्य रूप से देखा जाय तो संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के परिवार एवं सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। बी0एड0 प्रशिक्षुओं के अध्ययन तथा जो समय उन्होने अपने पठन–पाठन में अपने शिक्षण संस्थाओं में गुजारा है एवं उनका समाजिक प्रशिक्षण उनके संवेगात्मक परिस्थितियों के साथ समायोजन को सामान्यकृत कर रहा है जिस कारण अन्तर कम पाया जा रहा है।

1.2 अ. उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटिः

शोधकर्त्री नें व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्ध के विषय में अध्ययन के लिए न्यायदर्श को व्यक्तित्व परीक्षण में संदर्भित दो आयामों यथा मनोविच्क्षुब्दता एवं बहिर्मुखता के आधार पर अध्ययन को केन्द्रित किया है।

शोधकर्त्री नें व्यक्तित्व परीक्षण में उल्लिखित मनोविच्क्षुब्दता के आयाम पर प्राप्त अंक के आधार पर उच्च एवं निम्न समूहों में विभाजित किया है। समूहों का यह निर्धारण चतुर्थांश की गणना पर किया गया है। शोधकर्त्री ने प्रथम चतुर्थांक से कम अंक प्राप्त करने वाले समूह को निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह माना है एवं तृतीय चतुर्थांक से अधिक अंक प्राप्त करने वाले समूह को उच्च व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह माना है। व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) वितरण का प्रथम चतुर्थांक 17 मध्यॉक 23 तथा तृतीय चतुर्थांक 32 है।

सारणी–1.2.अ

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटिः

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
उच्च व्यक्तित्व परीक्षण समूह	20.5	5.9	.5
निम्न व्यक्ति परीक्षण समूह	22.9	4.5	.4

उच्च समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान 20.5 एवं निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान 22.9 है एवं मानक विचलन क्रमशः 5.9 एवं 4.5 है। अर्थात उच्च समूह का मध्यमान निम्न समूह की तुलना में कम है परन्तु मानक विचलन में व्युत्क्रम प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। अधिक मनोविच्क्षुब्दता धारित करने वाले करने वाले बी0एड0 प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व में नकारात्मक आयामों की अधिकता परिलक्षित होती है तथा उपर्युक्त पक्ष संवेगात्मक बुद्धि के आयामों के साथ साहचर्य नहीं रखते है जिसके कारण उच्च व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान कम है।

निम्न व्यक्तिव्त परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के संगत पक्ष में न्यूनता परिलक्षित है जिसके कारण उनके संवेगाात्मक बुद्धि प्राप्तॉक पर अनूकूल धनात्मक दिखाई दे रहा है जिसके कारण इस समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान तुलनात्मक रूप से अधिक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

उच्च व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह का मानक विचलन निम्न समूह की तुलना में अधिक है अर्थात उच्च समूह के संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तॉकों में अधिक विविधता पायी जा रही है एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह में विविधता न्यून है।

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक (मनोविच्क्षुब्दता) समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि को तुलनात्मक बाक्स आरेखीय निरूपण में X अक्ष पर क्रमशः निम्न व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह प्राप्तॉक तथा उच्च व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह को व्यक्त किया गया है एवं Y अक्ष पर बी0एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि को व्यक्त किया गया है।

निम्न व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्क्षुब्दता) समूह प्राप्तॉक का वितरण सामान्य नही है।

1.2. ब उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्छुब्दता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों का अन्तर एवं क्रान्तिक अनुपात

सॉख्यिकीय गणना से स्पष्ट है कि मनोविच्छुब्दता आयाम के आधार पर उच्च व्यक्तित्व प्राप्तॉक (मनोविच्छुब्दता) समूह एवं निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (मनोविच्छुब्दता) के मध्यमानों में अन्तर 2.39 है। तथा सॉख्यिकीय गणना में स्वतन्त्रता का अॅश 261 एवं मध्यमानों में अन्तर की मानक त्रुटि .65 है। अन्तर के मानक त्रुटि के आधार पर गण्ना में क्रान्तिक अनुपात का मान 3.6 है जो .05 विश्वसनीयता स्तर पर टेबल टी का क्रान्तिक अनुपात टेबल में संदर्भित मान से अधिक है अर्थात 100 मे से 95 अवसरो से अधिक बार यह अन्तर शून्य से अधिक है।

सारणी–1.2.ब

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (मनोविच्छुब्दता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों अन्तर की एवं उनका क्रान्तिक अनुपात

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमानों का अन्तर	अन्तर की मानक त्रुटि	स्वतन्त्रता का अॅश	क्रान्तिक अनुपात
उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण (मनोविच्छुब्दता) समूह	2.3	.65	261	3.6

.05 विश्वसनीता स्तर पर अन्तर की सार्थकता यह स्पष्ट कर रही है कि मनोविच्छुब्दता आयाम पर निर्धारित उच्च एवं निम्न समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में जो अन्तर दिखाई दे रहा है वह जनसंख्या की प्रकृति में है तथा बी0एड0 प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व में उल्लिखित मनोविच्छुब्दता का आयाम उनके संवेगात्मक बुद्धि को प्रभावित कर रहा ळें

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

1.3 अ उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान का मानक त्रुटि

शोधकर्त्री ने व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तॉक के बहिर्मुखता के आयाम पर प्राप्त पर प्राप्त अंको के वितरण से प्रथम चतुर्थांश एवं चतुर्थ चतुर्थांश को निम्न समूह एवं उच्च समूह के रूप में स्वीकार किया है। वितरण के प्रथम चतुर्थांक 21 से नीचे स्थित बहिर्मुखता आयाम पर प्राप्तॉक वाले बी0एड0 प्रशिक्षुओं के समूह को निम्न समूह एवं 29 प्राप्तॉक से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बी0एड0 प्रशिक्षुओं को उच्च समूह के रूप में स्वीकार किया है। वितरण का मध्यॉक 25 है।

सारणी 1.3 अ

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि

उच्च व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
उच्च व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह	22.2	4.7	.38
निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह	21.5	5.6	.47

अध्ययन में उल्लिखित उच्च समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 21.5 है। संगत रूपसे उच्च एवं निम्न समूह के मध्यमान क्रमशः 4.7 एवं 5.6 है। अर्थात व्यक्तित्व परीक्षण के बहिर्मुखता आयाम पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले समूह का मध्यमान अधिक है जो यह संकेत देता है कि बहिर्मुखता के आयाम से सम्बन्धित पक्ष यथा संवेगात्मक बुद्धि के साथ संगत साम्य रखते है जिस कारण उनके संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक भी उच्च है।

इसी प्रकार निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान कम है जो यह संकेत देता है कि बहिर्मुखता एवं संवेगात्मक बुद्धि के मनोवैज्ञानिक पक्ष में संगत साहचर्य है।

निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का केन्द्रिय प्रवृत्ति से विचलन अधिक है यथा मानक विचलन 5.6 है जो संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉकों के अधिक विविध होने का संकेत दे रहा है।

उच्च एवं निम्न समूह के संवेगात्तमक बुद्धि प्राप्तॉक के आधार पर निर्मित रेखीय आरेख दोनों समूहों के तुलनात्मक विवेचन के लिए एक आधार प्रदान करता है। निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का वितरण समामित है अर्थात मध्यॉक प्रथम चतुर्थांक एवं तृतीय चतुर्थांक के मध्य समान रूप से ऑकड़ों का वितरण पाया जा रहा है उसी प्रकार मध्यॉक से न्यूनतम प्राप्तॉक बिन्दु के बीच की दूरी समान है जो ऑकड़ों के समामि वितरण को संकेत दे रहा है।

उच्च व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का वितरण समामित नही है अर्थात मध्यॉक से प्रथम चतुर्थांक के मध्य तृतीय चतुर्थांक की तुलना में अधिक बी0एड0 प्रशिक्षुओं के अंक वितरित है जो असममित वितरण का संकेत देता है।

उच्च व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तांक बहिर्मुखता एवं निम्न व्यक्ति परीक्षण बहिर्मुखता समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का ग्राफीय निरूपण से स्पष्ट है कि न्यूनतम प्राप्तॉक तथा प्रथम चतुर्थांक के मध्य तृतीय चतुर्थांक एवं उच्चतम प्राप्तॉक की तुलना में अधिक अंक वितरित है जो यह संकेत देता है कि उच्च समूह का वितरण असममित है। उच्च समूह के

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

वितरण में ऋणात्मक विषमता पायी जाती है अर्थात अधिक ऑकड़े प्रथम चतुर्थांक की ओर पाये जाति है अर्थात वितरण का मध्यमान मध्यॉक से कम है। यह इस बात की ओर संकेत देता है कि उच्च व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के संवेगात्मक बुद्धि का वितरण निम्न प्राप्तॉक की ओर झुका हुआ है। दोनो बाक्स आरेख की तुलना करने पर यह दृष्टिगत है कि निम्न समूह का प्रवार उच्च समूह की तुलना में कम है।

1.3 ब उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉकों के मध्यमानो का अन्तर एवं क्रान्तिक अनुपात

बहिर्मुखता के आयाम पर प्राप्त अंक के आधार पर निर्मित दोनों समूहों के मध्य मध्यमानों का अन्तर .77 स्वतन्त्रता का अंश 293 तथा अन्तर की मानक त्रुटि .60 है। अन्तर की मानक त्रुटि .60 जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.27 है।

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमानों का अन्तर	अन्तर की मानक त्रुटि	स्वतन्त्रता का अॅश	कान्तिक अनुपात
उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह	.77	.60	293	1.2

सारणी 1.3 ब

उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व प्राप्तॉक (बहिर्मुखता) समूह के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में मध्यमानों का अन्तर एवं क्रान्तिक अनुपात

यह मान .50 सार्थकता स्तर पर स्वीकार्य है अर्थात 100 मे से 95 मध्यमानों के अन्तर मध्यानों के अन्तर के न्यादर्श वितरण में $\pm 1.27\ \sigma m$ के मध्य है अर्थात मध्यमानों के मध्य पाया जाने वाला यह अन्तर सार्थक नही है एवं अन्तर उच्च एवं निम्न समूह की जनसंख्या में नही है वरन यह अन्तर न्यादर्शन त्रुटि या किसी अन्य कारण से है।

1.4 बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

बी.एड. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व सम्बन्धी मनोविच्छुब्दता आयाम के आधार पर निर्धारित उच्च एवं निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि के अन्तर का अध्ययन पूर्व बिन्दुओं में शोधकर्त्री द्वारा किया गया है । प्रस्तुत बिन्दु बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन है।

शोधकर्त्री ने संगत अध्ययन हेतु बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं व्यक्तित्व के मनोविच्छुदता आयाम के वर्णनात्मक सॉख्यिकी के ऑकड़े प्रस्तुत किये है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

सारणी सख्या 1.4 अ

चर	मध्यमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
संवेगात्मक बुद्धि	22.0	5.6	.17	.01 स्तर पर सार्थक
मनोविच्छुब्दता आयाम	24.0	10.3		

बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम का मध्यमान, एवं मध्यमान से विचलन एवं सहसम्बन्ध गुणांक

बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 22 एवं मध्यमान से प्राप्तांकों का मानक विचलन 5.6 है इसी प्रकार व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम का मध्यमान 24 है एवं मानक विचलन 10.3 है। इस प्रकार मनोविच्छुदता का मध्यमान से मानक विचलन संवेगात्मक बुद्धि की तुलना में अधिक है जो उसके अधिक विच्छिन्न स्वरूप को व्यक्त कर रहा है। परन्तु यह वर्णनात्मक सॉख्यिकी दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के मध्य सम्बन्ध पर सम्पूर्ण प्रकार नही डाल रही है।

इस प्रकार दोनों मनोवैज्ञानिक चरो के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध के अध्ययन के लिए शोधकर्त्री में दोनों चरो के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया है। दोनों चरों के मध्य व्युत्क्रमानुपाती सम्बन्ध परिलक्षित हो रहा है। सांख्यिकीय गणना के आधार पर विभाजन सहसम्बन्ध गुणांक .17 है जो सूक्ष्म एवं नगण्य मात्रा का है। यद्यपि दोनों के मध्य पारस्परिक विपरीत सम्बन्ध व्यक्त किया गया है। बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के जब एक तरफ बुद्धि देखी जाती है तो उनके व्यक्तित्व के मनोविछुदता आयाम ने सूक्ष्म एवं नगण्य मात्रा की कमी दृष्टिगत है। यद्यपि शोधकर्त्री दोनों मनोवैज्ञानिक चरो के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध के अध्ययन के लिए सहसम्बन्ध गुणांक को आधार माना है परन्तु यह कार्य कारण सम्बन्ध का संकेत नही है जो चरों की पारस्परिक निर्भरता का संकेत हो।

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत सम्बन्ध के रेखीय निरूपण के लिये बी.एड.. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम पर प्राप्त अंको के वर्गान्तर को एवं उनके संगत संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक को वर्गान्तर अक्ष पर प्रदर्शित किया है। प्रस्तुत प्रकीर्ण आरेख का आलेखी निरूपण एवं रेखीय प्रतिगमन में प्रस्तुत सर्वश्रेष्ठ फिट की रेखा दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के मध्यम सूक्ष्म एव नगण्य मात्रा के नकारात्मक सहसम्बन्ध को व्यक्त कर रहा है। प्रस्तुत सहसम्बन्ध गुणांक 0.01 स्तर पर सार्थक है अर्थात हम .99 विश्वास स्तर पर कह सकते हैं कि जनसंख्या का सहसम्बन्ध गुणांक 2.5 के बीच में होगा।

1.5 बी.एड. प्रशिक्षुओं क संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम के मध्य सम्बन्ध।

शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम के सम्बन्धों के अध्ययन में पाया है कि दोनों मनोवैज्ञानितक चरों के मध्य ऋणात्मक प्रकार का नगण्य स्तर का सहसम्बन्ध है। प्रस्तुत अध्ययन उनके संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक तथा व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम के पारस्परिक सम्बन्ध पर केन्द्रित है। बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान 22.0 एवं मानक विचलन 5.1 है जो व्यक्तित्व परीक्षण के बहिर्मुखता आयाम पर प्राप्त अंकों के वर्णानात्मक साख्यिकीय मान यथा मध्यमान 24.8 एव मानक विचलन 5.8 से कम है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सारणी संख्या 1.5 अ

बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं व्यक्तित्व परीक्षण के बहिर्मुखता आयाम का मध्यमान मानक विचलन एवं सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
बहिर्मुखता आयाम	22.0	5.1	0.13	0.01 स्तर पर सार्थक
संवेगात्मक बुद्धि	22.0	5.6		

बहिर्मुखता आयाम पर अंकों का मध्यमान संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमान की तुलना में अधिक है। दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के मानक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि बहिर्मुखता आयाम का मानक विचलन आंशिक रूप से संवेगात्मक बुद्धि के मानक विचलन की तुलना में कम है। दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के मानक विचलन की तुलना पर स्पष्ट है कि बहिर्मुखता आयाम पर प्राप्त अंकों का स्वरूप अधिक विच्छिन्न है।

सारणी में उल्लिखित दोनों चरों के पारस्परिक सम्बन्ध के सांख्यिकीय अध्ययन के लिये शोधकर्त्री ने पियरसन्स सहसम्बन्ध गुणाक .03 प्राप्त किया है जो प्रकृतितः धनात्मक परन्तु सूक्ष्म एव ंनगण्य है।

आशय यह है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में होने वाला परिवर्तन समान रूप से समान दिशा में बहिर्मुखता प्राप्तांक को प्रमाणित कर रहा है परन्तु यह संख्यात्मक रूप से बहुत सूक्ष्म एव ंनगण्य है।

सह–सम्बन्ध गुणांक का यह मान .03 है जो .01 स्तर पर सार्थक नहीं है अर्थात .99 विश्वास स्तर पर यह नहीं कहा जा सकता है कि जनसंख्या का सह सम्बन्ध गुणांक त़2ण्5त के बीच होगा।

परिणाम एवं व्याख्या

शोध कार्य के अन्तर्गत सांख्यिकीय गणनाओं एवं विश्लेषण के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा शोध उद्देश्यों हेतु निर्धारित शोध परिकल्पनाओं एवं उप परिकल्पनाओं की स्थिति के आधार पर प्राप्त परिणाम को बिन्दुवार उल्लेख अधोलिखित है।

बिन्दु–1.1 पुरूष एवं महिला बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या–.05 सार्थकता स्तर पर गणना के द्वारा प्राप्त क्रान्तिक आनुपातिक मान सारणी मान से कम है। यह अन्तर इस बात का द्योतक है कि लैंगिक अन्तर से बी.एड़. प्रशिक्षुओं के सवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर दिखाई नहीं दे रहा है। अर्थात पुरूष एवं महिला बी.एड़. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई विशेष प्रकार का गुणात्मक अन्तर नहीं है। जो आंकिक भेद है वह साख्किीय गणनाओं की प्रक्रिया एवं प्रविधि के कारण है।

बिन्दु 1.2 बी.एड़. प्रशिक्षुओं के चयनित उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व (मनोविच्छुब्दता) परीक्षण प्राप्तांक समूह के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सम्बन्ध है।

व्याख्या –.50 सार्थकता स्तर पर बी.एड़. प्रशिक्षुओं के उच्च व्यक्तित्व (मनोविच्छुब्दता) परीक्षण प्राप्तांक समूह एवं निम्न व्यक्ति (मनोविच्छुत्दता) परीक्षण प्राप्तांक समूह के संवेगात्मक बुद्धि में पाये जाने वाले अन्तर की गणना का आधार पर प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सारणी मान से अधिक है।

बिन्दु 1.3 उच्च यक्तित्व (बहिर्मुखता) परीक्षण प्राप्तांक समूह एवं निम्न व्यक्तित्व (बहिर्मुखता) परीक्षण प्राप्तांक समूह के बी.एड़. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या – बी.एड़. प्रशिक्षुओं के दो समूहों जिन्हे व्यक्तित्व परीक्षण के बहिर्मुखता आयाम के प्राप्तांक के आधार पर संगठित किया गया के संवेगात्मक बुद्धि में पाया जाने वाले अन्तर का क्रन्तिक अनुपात मान सारणी मान से कम है। ब्राउन (2009) ने बर्हिमुखता एवं संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि बहिर्मुखता एवं संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है जो यह स्थापित करता है कि संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक बढ़ने के साथ व्यक्तित्व परीक्षण के बहिर्मुखता आयाम पर प्राप्तांक बढ़ता है एवं संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक घटने के साथ–साथ बहिर्मुखता प्राप्तांक घटता है।

बिन्दु 1.4 बी.एड़. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण प्राप्तांक एवं उनके व्यक्तित्व (मनोविच्छुब्दता) प्राप्तांक के मध्य सार्थक सम्बन्ध हैं।

व्याख्या : बी.एड़. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के मनोविच्छुब्दता आयाम के मध्य प्राप्त पियरसन सह–सम्बन्ध गुणांक के आधार पर आगणित क्रान्तिक अनुपात का मान सन्दर्भित स्वंत्रता के अंश पर सारणी मान से अधिक है जिसके आधार सांख्यिकीय रूप से स्थापित होता है कि दोनों चरों के मध्यम सार्थक सम्बन्ध है। अर्थात बी.एड़. प्रशिक्षुओं में के मनोविच्छुब्दता प्राप्तांक बढ़ने के साथ–साथ उनकी संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक में वृद्धि दिखाई देती है जो मनोविच्छुब्दता घटने के साथ–साथ बढ़ती है अर्थात चरों के मध्य ऋणात्मक स्तर का सह–सम्बन्ध है। यह स्पष्ट करता है कि क्रान्तिक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक है।

बिन्दु 1.5 बी.एड़. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं उनके व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम प्राप्तांक के मध्यम सार्थक सम्बन्ध है।

व्याख्या : बी.एड़. प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के बहिर्मुखता आयाम पर प्राप्त अंकों के बढ़ने के साथ उनके संगत संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों में वृद्धि होती है तथा अंकों के कम होने पर उसमें कमी दिखाई देती हैं। यह सम्बन्ध दोनों चरों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध को व्यक्त करता है। दोनों के मध्यम पाया जाने वाला पियरसन सह–सम्बन्ध गुणांक .05 स्तर पर सार्थक है। आशय यह है कि आगणित मान 498 स्वतंन्त्रता के अंश पर सारणी मान से अधिक है जो यह प्रमाणित करता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं बहिर्मुखता आयाम में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

अध्ययन का निहितार्थ

शिक्षक की गुणवत्ता का विषय सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक अंग है परन्तु गुणवत्ता की सम्पूर्णता में इस आयाम का महत्व अधिक है। यदि शिक्षक को समझने का प्रयास करें तो वह न सिर्फ विषय वस्तु के ज्ञान के कारण महात्वपूर्ण है वरन उसका व्यक्तित्व एक प्रमुख अंग है। शिक्षक की बुद्धि लब्धि, उनकी संवेगात्मक बुद्धि, आत्म सम्मान, एवं शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसयिक विशिष्टता के लिये महात्वूपर्ण है।

शिक्षक की गुणवत्ता एक महत्वूपर्ण चर है जो छात्रों के उपलब्धि को प्रभावित करता है। अध्यापक शिक्षा, योजनाओं, प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है। जिसमें उनके ज्ञान, व्यवहार एवं कौशल को सुधारा जा सकता है। जिसके द्वारा शिक्षक कक्षा, विद्यालय एवं समाज में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन कर सके। इस व्यावसायिक पाठयक्रम का लक्ष्य शिक्षक के वैचारिक परिवर्तन से है जिसमें उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया जा रहा है। शिक्षण एवं अधिकम एक समाजिक अनुभव हैं। सामाजिक अनुभव में यह आवश्यक होता है कि हम संवेगों को किस प्रकार स्वीकार करें, उसकी समझ कैसी है एवं संवेगों को प्रबन्धन कैसे किया जा सके। एक छात्र के संवेगात्मक भावनाओं के सुधार एवं परिवर्तन हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं अपने संवेगात्मक बुद्धि को संन्तुलित कर सके एवं उसका संगत उपयोग अपने व्यवसाय में कर सके।

शोधकर्त्री ने स्वीकार किया है कि प्रशिक्षुओं के व्यावसायिक दक्षता हेतु यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व का संवेगात्मक आयाम अधिक परिपक्तव संवेदनशील एवं दृढ हो जिससे यह भविष्य का अध्यापक अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समावेशी एवं संवेदनशील बना सके। अध्यापक शिक्षा में योजना एवं प्रक्रियागत स्तर पर ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो सम्भावित शिक्षक को ज्ञान, विस्तार, व्यवहार एवं कौशल के स्तर पर इतना दक्ष बना सके जो कक्षा से लेकर समुदाय एवं समाज में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके। अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो प्रशिक्षु के व्यवहारिक स्तर में ऐसे बदलाव ला सके जो उनको व्यवसाय के योग्य बना सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक की स्वायत्तता पर बल देती है जिसके द्वारा वे निर्धारित शिक्षण विधि का चयन कर सके जो छात्र की सामाजिक एवं संवेगात्मक पक्ष को समझ सके एवं विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास को सुनिश्चित कर सके। सन्दर्भित तथ्यों की प्राप्ति हेतु शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अनुसंधान में बुद्धि, व्यक्तित्व, संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म सम्मान के अध्ययन को स्वीकार किया है जिसमे शिक्षक शिक्षा का संवर्धन किया जा सके। शिक्षक के ज्ञानात्मक, बोधात्मक एवं क्रियात्मक विकास हेतु यह आवश्यक है कि विभिन्न आयामों को व्यवस्थि स्वरूप प्रदान किया जाये। किसी एक चर या मनोवैज्ञानिक पक्ष के प्रबल होने से एक सम्पूर्ण समावेशी शिक्षक का निर्माण नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्त्री ने अनेंक मनोवैज्ञानिक चरो का समावेश किया है जो शिक्षक के निर्माण में उपयोगी हो सके।

REFERENCES

[1]. Petrides et.al, (2004) A study of Relationship between Emotional Intelligence, Cognitive Ability and Academic Performance.

[2]. Allport,Gordon,W.(1961),Pattern and Growth in Personality, Holt, Rinehart and Winston, New York.

[3]. Bar-on R (1997) Multi-Health Systems, The Emotional Quotient Inventory (EQ-i)Tehnical Manual, Toronto, Cananda.

[4]. Mayer, J.D., Roberts, R.D. & Bassade, S.G. (2008) Human Abilities: Emotional Intelligence. Annual Review of Psychology, 59, 507-536.

[5]. Tyagi,S.K.(2004) Emotional Intelligence Secondary Teachers in Relation to Gender and Age, Journal of Educational Research and Edtension,41(3),39-45.

[6]. Katyal S.and Awasthi,E. (2005)Gender Difference in Emotional Intelligences among Adolescences ofChandigarh, Journal of Human Ecology, 17(2).153-155.

[7]. Sunbul,A.M. and Aslan, Y. (2008) The Relationship Between Emotional Intelligence and Achievement Among 1st and 4th grade AFculty Students. Scientific Bulletin- Education Scince Series,2,27-42.

[8]. Agarwal, S. et.al. (2017) Understanding the Role of Emotional Intelligence in Karma Yoga and time Management Skills of College Students. Indian Journal of Psychology and Education, 7(1), 30-40.